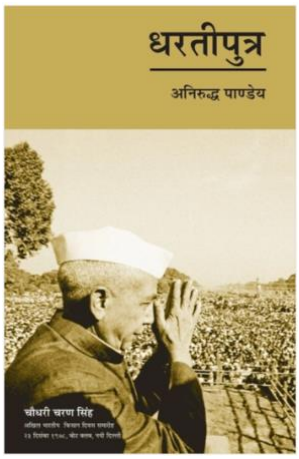

धरतीपुत्र: एक समीक्षात्मक अवलोकन

अनिरुद्ध पाण्डेय[1] द्वारा लिखित पुस्तक "धरतीपुत्र" एक जीवनीपरक ग्रंथ है जो चौधरी चरण सिंह के जीवन, विचारधारा तथा राजनीतिक यात्रा को सविस्तारित प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। यद्यपि चौधरी चरण सिंह के जीवन तथा उनके योगदानों से संबंधित कई आख्यान दिए गए है, परंतु यह पुस्तक इसलिए विशेष है क्योंकि अनिरुद्ध पाण्डेय चरण सिंह के जीवन के कुछ ऐसे तथ्यों को पाठक के समक्ष लाने का प्रयास करते हैं जो शायद ही किसी को पता हो। यह विशिष्टता जीवन के सदियों बाद तक आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन सकती है। अनिरुद्ध पाण्डेय पर चरण सिंह का प्रभाव उस समय पड़ा जब उन्होने चरण सिंह को 1951 में पहली बार मेरठ के सर्किट हाउस से दूर देखा था। इतना उत्साह था कि सर्किट हाउस के भीतर जाकर उन्होंने चरण सिंह के सादे जीवन को अपने आँखों में भरना चाहा। इसके साथ ही यह प्रकट भी किया कि यह किसान सा दिखने वाला वह 'धरतीपुत्र' गाँवों में बसने वाली भारत की विशाल सर्वशोषित मानवता के असह्य दुख की जीवंत भाषा बनेगा। यह पुस्तक आमुख व परिशिष्ट के अलावा कुल 12 अध्यायों में विभक्त है जो चरण सिंह के संपूर्ण जीवन वृतांत को एक सामान्य पाठक के समक्ष रखने का प्रयास करती है।

प्रथम अध्याय जो चरण सिंह के व्यक्तित्व व विचार से संबंधित है इसके अंतर्गत अनिरुद्ध पाण्डेय चरण सिंह के उन महान विचारों को रखते हैं जिनसे चरण सिंह प्रभावित थे। उदाहरणतः चरण सिंह पर गाँधी के विचारों का प्रमुख प्रभाव रहा। जिस प्रकार गाँधी जी असाधारण प्रतिभा संपन्न महामानव थे, उसी प्रकार चरण सिंह भी किसानों के मसीहा थे। चरण सिंह ने अपनी विकल्प की आर्थिक नीति को भी गाँधीवादी परिवेश में बहुत ही सच्चाई से प्रस्तुत किया। क्योंकि चरण सिंह का मानना था कि ऐसी अवधारणा,

[1] अनिरुद्ध पांडेय का चयन 1950 के दशक में उत्तर प्रदेश प्रांतीय सिविल सेवा (PCS) के लिए हुआ था, और पदोन्नति के माध्यम से वे भारतीय प्रशासनिक सेवा (IAS) तक पहुंचे, जहां से 1970 के दशक में सेवानिवृत्त हुए। प्रांतीय सेवा के दौरान, उनका संपर्क चौधरी चरण सिंह से हुआ, और वे उनके व्यक्तित्व व विचारों से प्रभावित हुए। सेवानिवृत्ति के बाद, पांडेय ने 1981 से 1983 के बीच चौधरी चरण सिंह से कई बार मुलाकात की और विशेष रूप से उनके बचपन की स्मृतियों को दस्तावेज़ रूप में संकलित किया। इस अवधि के दौरान, उन्होंने चरण सिंह की पत्नी, गायत्री देवी से भी मुलाकात की, ताकि इस जीवनी को लिखने के लिए महत्वपूर्ण जानकारी एकत्र की जा सके। रोचकीय बात यह है कि यह पुस्तक 1986 में प्रकाशित हुई, यद्यपि इसे 1984 में पूरा किया गया था, इसलिए, यह महान व्यक्ति का मूल्यांकन उस समय से है जब वे जीवित थे, हालांकि वे अस्वस्थ थे और इस पुस्तक को पढ़ने की स्थिति में नहीं थे। (चौधरी चरण सिंह को नवंबर 1985 में ब्रेन स्ट्रोक हुआ था, और वे मई 1987 में अपने निधन तक अक्षम रहे)। 1984 में प्रकाशित यह जीवनी चरण सिंह के व्यक्तित्व, आर्थिक तथा सामाजिक विचार के साथ पारिवारिक तथा ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का भी विवरण प्रदान करती है जिस कारण यह पुस्तक अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है।

जो सामान्यतः ग्रामीण उद्योग एवं ग्रामीण विकास पर बल देती है, का सही अनुकरण करके ही देश गरीबी से निदान पा सकता है एवं अधिकतर 80 प्रतिशत लोगों को सशक्त बना सकता है। यद्यपि कई बार चरण सिंह के विचारों की साम्यवादी आलोचना भी की गई है, जिनका मानना है कि सिंह की नीति से किसान तथा खेतिहर मजदूर शक्तिशाली हो जाएगा और देश में वर्ग संघर्ष का सूत्रपात होगा। परंतु यह कथन ही गलत है क्योंकि 80 प्रतिशत जनसमूह के शक्तिशाली हो जाने से वर्ग संघर्ष कैसे उत्पन्न हो सकता है? सिंह मानते थे कि भारत की अधोगति का समाधान ना तो पूंजीवाद व्यवस्था में ना ही साम्यवाद में है। इसका समन्वित रूप गाँधीवादी विचारधारा (बहुजन हिताय) है जो करोड़ों लोगों के जीवन को गतिमान बना सकती है। वह सिर्फ महात्मा गाँधी के ही अनुयायी नहीं थे अपितु महर्षि दयानंद से प्रेरणा, गाँधी से विचार तथा सरदार पटेल से कर्मयोग को भी अनुग्रहण किया। वह स्वामी विवेकानंद के कर्मयोग से भी प्रभावित थे। पाण्डेय कहते हैं कि चरण सिंह के राजनीतिक प्रधान व्यक्तित्व में ज्ञान, भक्ति तथा कर्म मार्गों का अद्भुत सामंजस्य था।

दूसरा अध्याय *'मड़ैयों में प्रकाश'* में पाण्डेय चरण सिंह के जन्म (23 दिसंबर 1902) से लेकर उनके बाल्यावस्था तक की घटनाओं को चित्रित किया है। उनका जन्म मेरठ के नूरपुर गाँव की मड़ैयों के बीच एक साधारण किसान परिवार में हुआ था। इस समय भारत ब्रिटिश शासन के अधीन था। पाण्डेय इस अध्याय में चरण सिंह की जीवनी का एक विशेष ऐतिहासिक विश्लेषण प्रदान करते हैं। जो सिर्फ चरण सिंह के जन्म से नहीं अपितु उनके पारिवारिक इतिहास को भी विश्लेषित करते हैं। मुगल काल में जन्में राजा बलराम सिंह तथा उनके वंशज राजा नाहर सिंह के शौर्य गाथा को बताते हुए तेवथिया परिवार के वंशजों का वर्णन करते हैं क्योंकि तेवथिया परिवार बहुत बड़ा था और मुगलों से अपनी सुरक्षा के लिए इन्हें कई दूर-दूर गाँवों में जाकर अपनी सुरक्षा को सुनिश्चित करना पड़ा। इन्हीं में चौधरी चरण सिंह के वंशज भी थे। पाण्डेय कहते हैं कि बादाम सिंह जो चरण सिंह के पितामह थे, 19वीं सदी के अंत में पारिवारिक जीविका की खोज में सियामी से नूरपूर गाँव में आए। वहाँ की बंजर जमीन पर मड़ैयां छाई और बसने की व्यवस्था की। इसी मड़ैयां में चरण सिंह का जन्म हुआ।

तीसरा अध्याय *'होनहार बिरवान के'* अंतर्गत पाण्डेय चरण सिंह के प्रारंभिक शिक्षा तथा युवावस्था का उल्लेख करते हैं। वे बचपन से ही मेधावी छात्र थे और कई चुनौतियों के बाद भी उन्होंने अपनी शिक्षा पूरी की। बचपन से ही 1857 की क्रांति में तेवथियों वंश के अंग्रेजों के विरुद्ध क्रांति करने की कहानी सुन कर चरण सिंह बड़े हुए थे, जिसका प्रभाव उनके ऊपर बना रहा। इसके कारण ही उनका झुकाव भारतीय स्वतंत्रता संग्राम तथा सामाजिक सुधारों की ओर गया। उन्होंने कानून की पढ़ाई की, जिससे उन्हें राजनीति में प्रभावी निर्णय लेने की क्षमता मिली। बचपन में माँ से मिली शुचिता तथा अंतर्मुखी प्रवृति, पिता से प्राप्त कुशाग्र बुद्धि तथा पर दुख कातरता उनके व्यक्तित्व का मूल आकर्षण रही। इसी समय देश-काल में ऐसी परिस्थितियों का जन्म हो रहा था जो चरण सिंह के मन को झकझोर कर रख दे रहा था। अंग्रेज फूट डालो राज करो जैसे कुकृत्य कर रहे थे। इसी समय इन्होंने मैथिली शरण गुप्त तथा लोकमान्य गंगाधर तिलक को पढ़ना शुरू किया जिसके बाद इनके भीतर स्वदेश प्रेम ने जन्म लिया।

चौथा अध्याय *'कॉलेज की शिक्षा और विवाह'* से संबंधित है। पाण्डेय कहते हैं कि चौधरी चरण सिंह की पढ़ाई में लगन को देखते हुए सुविख्यात समाजसेवक स्वर्गीय डॉक्टर भूपाल सिंह ने कॉलेज की पढ़ाई के लिए 10 रुपये महीना वजीफा देने का

निर्णय लिया था। गाँधी द्वारा 1921 में खिलाफत तथा असहयोग आंदोलन का आह्वान किया गया था, जिसमें अंग्रेजी स्कूली पद्धति का विरोध किया गया, जिसके कारण से चरण सिंह अपनी कॉलेज की पढ़ाई छोड़ने के लिए तैयार हो गए थे, परंतु भूपाल सिंह ने उनके भविष्य को देखते हुए उन्हें कॉलेज नहीं छोड़ने दिया। उन्होंने अपने एम. ए. की पढ़ाई के साथ-साथ कानून की पढ़ाई भी शुरू की और कानून की पढ़ाई में प्रथम स्थान प्राप्त किया। उच्च शिक्षा ने युवक चरण सिंह को आर्यसमाजी बना दिया। इसी समय 1924 में मथुरा में बड़े धूमधाम से स्वामी दयानंद सरस्वती की जन्म शताब्दी मनाई गई। इसी समारोह में पहली बार चरण सिंह की भेंट गायत्री देवी से होती है जो उनकी धर्मपत्नी बनती है। गायत्री देवी ने चरण सिंह के जीवन के कर्म-क्षेत्र में घर के भीतर ही नहीं अपितु बाहरी स्तर में भी उनका पूरा साथ दिया।

अध्याय पाँच *'समरांगण:राष्ट्रीय काँग्रेस में (1920 से 1939)'* है। इस अध्याय में उनके काँग्रेस में शामिल होने तथा राजनीति में प्रवेश की कहानी है। वे काँग्रेस की नीतियों से प्रभावित जरूर थे लेकिन धीरे-धीरे यह अनुभव किया कि काँग्रेस किसानों के असल मुद्दों से दूर होती जा रही है। यह वह समय था जब गाँधी जी का सत्याग्रह अपने चरम पर था। देशभक्ति से ओतप्रोत चरण सिंह गाँधी के आंदोलन से बहुत प्रभावित हुए तथा अंग्रेजों के दमन के खिलाफ वह इस जंग में उतर गए। बेरोजगारी, गरीबी, भुखमरी भरे दौर में चरण सिंह ने ईमानदारी तथा नैतिकता का दामन थामा और 1927 में वकालत का काम शुरू किया। वह जात-पात के घोर विरोधी थे, इसके लिए उन्होंने कई बार इस आधार पर स्कूल का प्रधानाचार्य बनने तक के लिए मना कर दिया क्योंकि उसमें जाट शब्द लिखा था। उनके सिद्धांत ही उनका व्यक्तित्व बन गया था। 1930 में गाँधी जी का नामक कानून के विरोध में देशव्यापी सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू हुआ। गाजियाबाद में गाँधी के इस आंदोलन को सफल बनाने का बीड़ा चरण सिंह ने उठा रखा था। नामक कानून तोड़ने के अपराध में उन्हें 6 महीने की सजा भी मिली। यह उनकी पहली जेल यात्रा थी, जो आपातकाल तक चलता रहा। 1937 में उन्हें काँग्रेस की तरफ से बागपत से चुनाव लड़ने का निर्देश मिला, यहाँ से इनके औपचारिक राजनीतिक जीवन का आरंभ होता है। वह भारी बहुमत से विजयी हुए और एम. एल. ए. बनते ही किसानों को अपनी भूमि पर स्वामित्व दिलाने के लिए बिल 'Land Utilization Bill' का मसविदा तैयार किया। इस बिल से कई राज्यों के नेता प्रभावित भी हुए।

छठा अध्याय *'समरांगण: मेरठ में (1939 से 1947)'* है। इस अध्याय में लेखन ने उनके मेरठ के राजनीतिक जीवन पर प्रकाश डाला है। यह वह समय था जब वे किसानों के विषयों को लेकर सक्रिय रूप से आन्दोलनों में भाग ले रहे थे। मेरठ में उनकी पकड़ मजबूत हो रही थी और वह एक प्रभावशाली नेता के रूप में उभर रहे थे। मेरठ उनके लिए सिर्फ एक कार्यक्षेत्र नहीं था, अपितु एक क्रांतिकारी केंद्र था, जहाँ से उन्होंने किसानों के अधिकारों के लिए संघर्ष की नींव रखी। उन्होंने जमींदारी प्रथा के विरोध मे आवाज उठाई जिसके लिए उन्होंने राजनीतिक शैली जनता से संवाद करना तथा उनके मध्य उनके मुद्दों को प्राथमिकता देना रखा। चरण सिंह सं 1921-47 तक लगातार मेरठ के काँग्रेस के अध्यक्ष या महामंत्री रहे। इस बीच कई बार उन्हें जेल में भी डाला गया। मेरठ के छात्र नेता होने के कारण 1940 में पुनः गिरफ्तार किया गया था। उनको सेंट्रल जेल में रखा गया, फिर वहाँ से निकाल कर बरेली जेल में डाल दिया गया। इस जेल की अवधि बड़ी थी लेकिन चरण सिंह पढ़ने-लिखने वाले व्यक्ति थे। इस जेल में ही उन्होंने अपनी एक पुस्तक शिष्टाचार का अधिकांश भाग लिख डाला था। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में स्वतंत्रता आंदोलन को चलाने की पूरी

जिम्मेदारी चरण सिंह ने उठाई थी। वे भूमिगत होकर गाँव-गाँव घूम कर आंदोलन का नेतृत्व कर रहे थे। इस बीच वह किसानों को भी एकजुट कर रहे थे। यह अध्याय उनके नेतृत्व की दृढ़ता, साहस तथा लोकहितकारी नीतियों को रेखांकित करता है।

अध्याय सात *"स्वतंत्रता के बाद उत्तर प्रदेश मंत्रिमंडल में (1947-1966)"* स्वतंत्रता के बाद वे उत्तर प्रदेश की राजनीति में सक्रिय हुए। इस अध्याय में उनकी नीतियों और प्रशासनिक सुधारों का विवरण दिया गया है, खासकर जमींदारी उन्मूलन और भूमि सुधार से जुड़े उनकी सफलताओं पर जोर दिया गया है। इस दौरान उनका सबसे बड़ा योगदान जमींदारी उन्मूलन कानून रहा, जिसके तहत किसानों को सीधी भूमि का स्वामित्व देने का निर्णय लिया गया। उन्होंने सुनिश्चित किया कि जमींदारी प्रथा के अंत के बाद गरीब किसानों को उनकी जोत की भूमि पर अधिकार मिले। चौधरी चरण सिंह ने प्रशासनिक सुधारों के तहत सरकारी तंत्र में पारदर्शिता बढ़ाने के प्रयास किए। उन्होंने छोटे किसानों को कर्जमुक्त करने और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के लिए नई योजनाएँ लागू कीं। उनकी नीतियों के चलते उत्तर प्रदेश में कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई और किसानों का जीवनस्तर ऊँचा हुआ। इस समय उन्होंने शिक्षा और ग्रामीण विकास पर भी विशेष ध्यान दिया। वे मानते थे कि कृषि विकास के साथ-साथ शिक्षित समाज भी उतना ही महत्वपूर्ण है। उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों में स्कूलों और सड़कों के निर्माण को बढ़ावा दिया ताकि किसानों और मजदूरों को बेहतर जीवन सुविधाएँ मिल सकें।

उनकी सुधारवादी नीतियों के कारण उनके विरोधी भी बढ़ते गए, लेकिन वे अपनी नीतियों पर अडिग रहे और किसानों के हितों के लिए संघर्ष करते रहे। इस अध्याय में उनके प्रशासनिक कौशल, नीतिगत सुधारों और किसानों के उत्थान के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को विस्तार से बताया गया है।

अध्याय आठ *"उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री (भारतीय क्रांति दल) 1967-1975"* उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में चौधरी चरण सिंह का कार्यकाल उनके साहसिक और सुधारवादी दृष्टिकोण का प्रमाण था। मुख्यमंत्री बनने के बाद उन्होंने किसानों, मजदूरों और ग्रामीण विकास के हित में कई ऐतिहासिक फैसले लिए। उनकी सरकार की प्राथमिकता कृषि सुधार, भूमि स्वामित्व के पुनर्गठन, और भ्रष्टाचार उन्मूलन थी। उन्होंने भूमि सुधारों को अधिक प्रभावी बनाने के लिए सख्त कानून लागू किए, जिससे गरीब किसानों को भूमि का अधिकार मिला और वे आत्मनिर्भर बन सके। उन्होंने सहकारी कृषि प्रणाली को बढ़ावा दिया और सिंचाई सुविधाओं में सुधार करने के लिए बड़े पैमाने पर योजनाएं शुरू कीं। उनकी नीतियों के कारण उत्तर प्रदेश में कृषि उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। चौधरी चरण सिंह प्रशासनिक सुधारों के भी प्रबल समर्थक थे। उन्होंने सरकारी तंत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए कठोर कदम उठाए। सरकारी योजनाओं में पारदर्शिता लाने और नौकरशाही में जवाबदेही तय करने के लिए उन्होंने कई सुधार किए। उन्होंने शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार करने पर भी बल दिया, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में जीवन स्तर बेहतर हुआ। उनके कार्यकाल में ग्रामीण बुनियादी ढांचे के विकास पर भी विशेष ध्यान दिया गया। उन्होंने सड़क निर्माण, बिजली और सिंचाई परियोजनाओं को तेज़ी से आगे बढ़ाया, जिससे ग्रामीण इलाकों की अर्थव्यवस्था को मजबूती मिली। उनके नेतृत्व में उत्तर प्रदेश को एक नया राजनीतिक और आर्थिक दृष्टिकोण मिला, जिसने राज्य को विकास के नए पथ पर अग्रसर किया। उनके मुख्यमंत्री कार्यकाल की सबसे बड़ी

उपलब्धि यह थी कि उन्होंने सत्ता को किसानों और आम जनता के कल्याण का साधन बनाया। उन्होंने दिखाया कि एक नेता की सच्ची शक्ति उसके आदर्शों और नीतियों में निहित होती है, न कि केवल राजनीतिक जोड़-तोड़ में।

अध्याय नौ *"भादों की अमावस्या : अष्टग्रह"* यह अध्याय चरण सिंह के राजनीतिक जीवन के संघर्षों को उजागर करता है। यह वह समय होता है जो स्वतंत्र भारत के लिए काला दिन के रूप में दृष्टिगत होता है। 26 जून 1975 इंदिरा गाँधी द्वारा आपातकाल लगाया जाता है। इस समय उनकी राजनीतिक नीतियों के विरुद्ध गहरी असंतोष की लहर थी, खासकर जमींदारी उन्मूलन और किसानों के हित में उठाए गए कठोर निर्णयों को लेकर। इस समय वो इस कुनीति का विरोध कर रहे थे जिसके कारण उन्हें अन्य विरोधी नेताओं के साथ तिहाड़ जेल में डाल दिया जाता है। उनके विरोधी, जिनमें बड़े उद्योगपति, जमींदार और कुछ राजनीतिक गुट शामिल थे, उन्हें सत्ता से हटाने के लिए निरंतर षड्यंत्र कर रहे थे। वे नहीं चाहते थे कि चरण सिंह की नीतियां किसानों को सशक्त बनाएं और पारंपरिक सत्ता संरचना को चुनौती दें। इस कठिन समय में उनके नेतृत्व की असली परीक्षा हुई। उन्होंने किसानों और मजदूर वर्ग के समर्थन से अपनी राजनीतिक ताकत को बनाए रखा। उनका यह विश्वास था कि राजनीति केवल सत्ता का खेल नहीं बल्कि जनसेवा का एक माध्यम है। उन्होंने अपने समर्थकों से धैर्य बनाए रखने और सत्य के मार्ग पर चलते रहने की अपील की। इस अध्याय में पाण्डेय यह बताते है कि चौधरी चरण सिंह को सत्ता से हटाने के लिए किस प्रकार राजनीतिक साजिशें रची गईं और उन्होंने इन षड्यंत्रों का सामना किस दृढ़ता से किया। उनके जीवन का यह कालखंड भारतीय राजनीति के उस पक्ष को भी उजागर करता है जिसमें सत्ता संघर्ष, व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाएं और विचारधारा की लड़ाई प्रमुख थी। 6 फरवरी 1976 को चरण सिंह अपने अन्य साथियों के साथ मिलकर यह योजना बनाई की सभी विरोधी दल मिलकर एक नया दल बनाएंगे।

अध्याय दस *"जनता पार्टी का जन्म"* यह अध्याय जनता पार्टी के गठन की कहानी को दर्शाता है। चौधरी चरण सिंह ने कांग्रेस से अलग होकर अपनी अलग राजनीतिक धारा विकसित की। जनता पार्टी का उद्देश्य किसानों और गरीबों के अधिकारों की रक्षा करना था। 1970 के दशक में भारतीय राजनीति अस्थिरता और नीतिगत मतभेदों के दौर से गुजर रही थी। इस समय, चौधरी चरण सिंह को यह महसूस हुआ कि कांग्रेस पार्टी किसानों के वास्तविक मुद्दों से दूर होती जा रही है और सत्ता-संचालित राजनीति का हिस्सा बन रही है। उन्होंने कांग्रेस से अलग होकर एक नई राजनीतिक धारा विकसित करने का निर्णय लिया।

जनता पार्टी के गठन में चौधरी चरण सिंह की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण रही। 1977 में आपातकाल समाप्त होने के बाद, जब लोकसभा चुनाव हुए, तब कांग्रेस को भारी हार का सामना करना पड़ा। इस दौरान विभिन्न विपक्षी दलों ने मिलकर एक साझा मंच तैयार किया, जिसे जनता पार्टी के नाम से जाना गया। यह पार्टी विभिन्न राजनीतिक विचारधाराओं से प्रेरित नेताओं का एक गठबंधन थी, जिसमें कांग्रेस फॉर डेमॉक्रसि, सोशलिस्ट, जनसंघ, कांग्रेस (ओ) और भारतीय लोकदल शामिल थे। चौधरी चरण सिंह ने इस गठबंधन में अपनी विशेष भूमिका निभाई। वे मानते थे कि किसानों और ग्रामीण समुदाय के उत्थान के बिना देश का विकास संभव नहीं है। जनता पार्टी की नीतियों में कृषि सुधार, भूमि सुधार, भ्रष्टाचार उन्मूलन और लोकतांत्रिक मूल्यों की पुनर्स्थापना प्रमुख थे। जनता पार्टी सरकार ने सत्ता में आने के बाद कई बड़े सुधार लागू करने की कोशिश की। हालांकि, यह गठबंधन अधिक समय तक स्थिर नहीं रह सका। आंतरिक कलह, मतभेद और सत्ता की महत्वाकांक्षाओं के कारण यह सरकार कमजोर होती गई। इस

अध्याय में यह बताया गया है कि कैसे चौधरी चरण सिंह ने जनता पार्टी के निर्माण में अपनी भूमिका निभाई और किसानों की आवाज को राष्ट्रीय राजनीति के केंद्र में लाने का प्रयास किया।

अध्याय ग्यारह *"जनता पार्टी और सरकार का विघटन"* से संबंधित है। यह अध्याय जनता पार्टी की अस्थिरता, चौधरी चरण सिंह की भूमिका और भारत की राजनीति पर इसके प्रभावों का गहन विश्लेषण करता है। जनता पार्टी सत्ता में आई लेकिन ज्यादा दिनों तक नहीं चल सकी। इस अध्याय में जनता पार्टी के विघटन के कारणों और राजनीतिक अस्थिरता का विस्तृत वर्णन किया गया है। 1979 में जनता पार्टी की सरकार पूरी तरह विघटित हो गई और इंदिरा गांधी 1980 में पुनः सत्ता में आ गईं।

आंतरिक मतभेद और गुटबाजी: जनता पार्टी विभिन्न विचारधाराओं वाले दलों का गठबंधन थी, जिसमें वैचारिक मतभेद और व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं ने पार्टी को कमजोर किया।

सत्ता संघर्ष: पार्टी के प्रमुख नेताओं के बीच सत्ता को लेकर संघर्ष बढ़ गया। मोरारजी देसाई, चौधरी चरण सिंह और अन्य दिग्गज नेताओं के बीच मतभेद स्पष्ट हो गए, जिससे सरकार की स्थिरता पर असर पड़ा।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) का प्रभाव: जनता पार्टी के भीतर जनसंघ के नेताओं की भागीदारी पर सवाल उठाए जाने लगे। अन्य दलों को आरएसएस के प्रभाव से आपत्ति थी, जिसके चलते पार्टी में आंतरिक टकराव बढ़ा।

चौधरी चरण सिंह की भूमिका: चौधरी चरण सिंह किसानों के हितों को प्राथमिकता देने वाले एकमात्र नेता थे, लेकिन अन्य नेता आर्थिक और औद्योगिक नीतियों पर अधिक ध्यान केंद्रित कर रहे थे। उन्होंने कांग्रेस के समर्थन से प्रधानमंत्री बनने का निर्णय लिया, जिससे जनता पार्टी में और अधिक अस्थिरता उत्पन्न हुई।

कांग्रेस का राजनीतिक खेल: इंदिरा गांधी ने राजनीतिक चाल चलते हुए चौधरी चरण सिंह को समर्थन दिया, लेकिन संसद का सत्र बुलाने से पहले ही समर्थन वापस ले लिया, जिससे उनकी सरकार गिर गई। यह जनता पार्टी के अंतिम विघटन का प्रमुख कारण बना।

अध्याय बारह *"आने वाला कल"* यह अध्याय चौधरी चरण सिंह की भविष्य दृष्टि और उनके विचारों की प्रासंगिकता पर केंद्रित है। वे मानते थे कि भारत की प्रगति तभी संभव है जब किसानों और गरीबों को आत्मनिर्भर बनाया जाए। उन्होंने कृषि सुधारों, छोटे उद्योगों के विकास, भ्रष्टाचार उन्मूलन, प्रशासनिक पारदर्शिता और शिक्षा को प्राथमिकता देने की बात कही। उनका विचार था कि लोकतंत्र केवल नारेबाजी तक सीमित न रहकर जनता की वास्तविक भागीदारी सुनिश्चित करे। उनकी नीतियां आज भी भारतीय राजनीति और नीति-निर्माण के लिए मार्गदर्शक बनी हुई हैं।

अंततः धरतीपुत्र चौधरी चरण सिंह के जीवन तथा विचारों को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण पुस्तक है। यह ना केवल उनके संघर्षों को दर्शाती है, अपितु भारतीय राजनीति, कृषि नीति तथा आर्थिक सुधारों पर उनकी व्यापक समीक्षा-दृष्टि को भी प्रस्तुत करती है। चौधरी चरण सिंह किसानों के मसीहा माने जाते थे। उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन कृषकों, मजदूरों तथा शोषित वर्गों के उत्थान के लिए समर्पित कर दिया। वे गाँधीवादी विचारधारा में विश्वास रखते थे एवं मानते थे कि भारत की प्रगति कृषि तथा छोटे उद्योगों के विकास से ही संभव है। उनका जीवन संघर्ष, साहस, निष्ठा तथा सेवा का प्रतीक है। उनका योगदान आज भी प्रासंगिक है तथा उनकी नीतियाँ भारत के सामाजिक-आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान कर सकती है।